

प्रमुख जैवविविधता क्षेत्रों (KBA) के तापमान में वृद्धि

प्रलमिस के लिये: प्रमुख जैव विविधता क्षेत्र (KBA), कुनमगि-मॉन्टरयिल वैश्विक जैव विविधता ढाँचा, एंडीज परवत, उषणकटबिंधीय वन, बर्दलाइफ इंटरनेशनल, महत्त्वपूर्ण पक्षी और जैवविविधता क्षेत्र (IBA), बर्लड कंजरवेशन कॉन्ग्रेस, प्रकृति के संरक्षण के लिये अंतरराष्ट्रीय संघ (IUCN), प्रमुख जैव विविधता क्षेत्र साझेदारी, वर्षावन, मैंग्रोव, कार्बन पृथक्करण, पोषक चक्रण ।

मेन्स के लिये: उषणकटबिंधीय पारस्थितिकी तंत्र में प्रमुख जैव विविधता क्षेत्रों (KBA) पर ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव, उषणकटबिंधीय पारस्थितिकी तंत्र के क्षरण को रोकने के लिये आवश्यक उपाय ।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

चर्चा में क्यों?

हाल ही में एक अध्ययन से पता चला है कि ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के कारण उषणकटबिंधीय वनों में प्रमुख जैव विविधता वाले क्षेत्र (key biodiversity areas- KBA) नई तापमान व्यवस्था/न्यू टेम्परेचर रेंज (उच्च तापमान) में परिवर्तित हो गए हैं ।

- कुनमगि-मॉन्टरयिल वैश्विक जैवविविधता फ्रेमवर्क का लक्ष्य वर्ष 2030 तक विश्व की कम-से-कम 30% भूमिका संरक्षण करना है, जिसमें प्रमुख जैवविविधता क्षेत्रों (KBA) को मुख्य प्राथमिकता दी जाएगी ।

नोट:

- उषणकटबिंधीय वर्षावन घने और उषण वन हैं जो आमतौर पर भूमध्य रेखा के उत्तर और दक्षिण में 23.5 डिग्री के बीच पाए जाते हैं ।

कुनमगि-मॉन्टरयिल वैश्विक जैवविविधता फ्रेमवर्क (KMGBF) क्या है?

- परिचय: यह एक बहुपक्षीय संधि है, जिसका उद्देश्य वर्ष 2030 तक वैश्विक स्तर पर जैव विविधता के नुकसान को रोकना और कम करना है । इसे दिसंबर, 2022 में UNCBD के पार्टियों के सम्मेलन (CoP) की 15वीं बैठक के दौरान अपनाया गया था ।
- उद्देश्य और लक्ष्य: यह सुनिश्चित करता है कि वर्ष 2030 तक क्षीण हो चुके स्थलीय, अंतरदेशीय जल, तथा समुद्री एवं तटीय पारस्थितिकी तंत्र के कम-से-कम 30% क्षेत्रों का प्रभावी पुनर्स्थापन हो जाए ।
- इसमें वर्ष 2030 तक के दशक में तत्काल कार्रवाई के लिये 23 कार्य-उन्मुख वैश्विक लक्ष्य हैं, जिनमें प्रमुख जैव विविधता क्षेत्र (KBA) मुख्य प्राथमिकता के रूप में हैं ।
- दीर्घकालिक दृष्टिकोण: इस रूपरेखा में यह परकिलपना की गई है कि वर्ष 2050 तक प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिये सामूहिक प्रतिबद्धता होगी, जो जैव विविधता संरक्षण और सतत उपयोग पर वर्तमान कार्यों एवं नीतियों के लिये एक आधारभूत मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करेगी ।

अध्ययन की मुख्य बातें क्या हैं?

- KBA में तापमान परिवर्तन: उषणकटबिंधीय वन KBA का 66% हिससा एक नए चरण में प्रवेश कर चुका है, जिसकी विशेषता नई औसत वार्षिक तापमान व्यवस्था है ।
- क्षेत्रीय तापमान परिवर्तन: तापमान परिवर्तन का अनुभव करने वाले प्रमुख जैव विविधता क्षेत्रों (KBA) का प्रतिशत अफ्रीका में 72%, लैटिन अमेरिका में 59% और एशिया तथा ओशनिया में 49% था ।
 - हालाँकि, एशिया और ओशनिया में, 12% KBA ने नए तापमान परदृश्य में परिवर्तन नहीं किया है, हालाँकि इनमें से 23% असुरक्षित हैं ।
 - यद्यपि एशिया और ओशनिया में 23% KBA असुरक्षित हैं, तथापि उनमें से 12% ने नए तापमान परदृश्य को नहीं दर्शाया है ।
- ऊर्ध्वाधर तापमान परिवर्तन: खुले वातावरण की तुलना में वनाच्छादन के नीचे की जलवायु अधिक स्थिर होती है तथा यहां तापमान में कम परिवर्तन होता है ।

- असंगत प्रभाव: लैटिन अमेरिका (2.9%) तथा एशिया और ओशनिया (0.4%) में कुछ KBA लगभग पूरी तरह से नई तापमान स्थितियों में स्थानांतरित हो गए हैं, जसिमें 80% से अधिक माप उनकी पछिली सीमाओं के बाहर हैं।
 - इनमें इक्वाडोर, कोलंबिया, वेनेजुएला और पनामा के उष्णकटिबंधीय [एंडीज परवतमाला](#) के क्षेत्र शामिल हैं।
- स्थिर KBA: उष्णकटिबंधीय वन KBA का लगभग 34% हसिसा अभी तक नए तापमान प्रारूप का अनुभव नहीं कर पाया है, तथा इनमें से आधे से अधिक कसिी न कसिी प्रकार के संरक्षण में हैं।
 - उत्तरी ऑस्ट्रेलिया के [उष्णकटिबंधीय वन](#), नवीन तापमान स्थितियों से सबसे कम प्रभावित होने वाले वनों में से हैं।

प्रमुख जैवविधिता क्षेत्र (KBA) क्या हैं?

- अवधारणा की उत्पत्ति: बर्डलाइफ इंटरनेशनल ने महत्वपूर्ण पक्षी और जैवविधिता क्षेत्रों (IBA) की पहचान कर इस मॉडल की शुरुआत की। इस मॉडल की सफलता ने अन्य टैक्सोनोमिक समूहों, जैसे पौधों, ततिलयों और मीठे पानी तथा समुद्री जैवविधिता को शामिल किया।
 - वर्ष 2004 में बैंकॉक में वरल्ड कंज़र्वेशन कॉन्ग्रेस में, अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) ने एक एकीकृत ढाँचे की आवश्यकता को पहचाना, जसिकी परणित विरष 2016 के वैश्विक KBA मानक के रूप में हुई।
- KBA के बारे में: KBA वे स्थल हैं जो [जैवविधिता](#) की वैश्विक स्थरिता में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।
 - इनमें वशिषिट प्रजातियाँ या केवल सीमति क्षेत्रों में पाई जाने वाली प्रजातियाँ हो सकती हैं, और ये ग्रह के स्वास्थ्य के लयि महत्त्वपूर्ण हैं।
- मान्यता के लयि मानदंड: पाँच श्रेणियों के अंतर्गत 11 मानदंड हैं जनिहें कसिी साइट को KBA के रूप में अरहता प्राप्त करने के लयि पूरा करना होगा। ये श्रेणियाँ हैं:
 - संकटग्रस्त जैवविधिता
 - भौगोलिक दृष्टि से प्रतबंधित जैवविधिता
 - पारस्थितिकि अखंडता
 - जैविक प्रक्रियाएँ
 - स्थरिता
- वैश्विक KBA उपस्थिति: वर्तमान तक, वशि्व में 16,000 से अधिक KBA का मानचित्रण किया जा चुका है।
 - प्रमुख जैवविधिता क्षेत्र साझेदारी, जसिमें 13 वैश्विक संरक्षण संगठन शामिल हैं, वशि्व में KBA की पहचान, मानचित्रण और संरक्षण के लयि कार्य कर रही है।

भारत में 862 प्रमुख जैवविधिता क्षेत्र (KBA) हैं, जो जैवविधिता के संरक्षण के लयि महत्त्वपूर्ण हैं, जैसे पश्चिमी घाट।

उष्णकटिबंधीय वनों और KBA पर बढ़ते तापमान का क्या प्रभाव है?

- स्थरि सूक्ष्म जलवायु (माइक्रो-क्लाइमेट) में व्यवधान: अचानक होने वाले परिवर्तन उनकी तापीय सहनशीलता को पार कर सकते हैं, जसिसे नुकसान हो सकता है। स्थरि सूक्ष्म जलवायु के भीतर वशिषिट स्थानों पर रहने वाली प्रजातियों को आवासों के नुकसान सामना करना पड़ सकता है।
- जैवविधिता के लयि खतरा: तापमान में वृद्धि से आवासों का नुकसान हो सकता है, वशिष रूप से वर्षा वनों, [मैंग्रोव](#) और [प्रवाल भित्तियाँ](#) जैसे संवेदनशील पारस्थितिकि तंत्रों में।
- पारस्थितिकि तंत्र सेवाओं में परिवर्तन: बढ़ते तापमान से पारस्थितिकि तंत्र सेवाएँ जैसे [कार्बन पृथक्करण](#), जल वनियमन और पोषक चक्रण प्रभावित हो सकता है।
- आक्रामक प्रजातियों का खतरा: अधिक तापमान के कारण आक्रामक प्रजातियों में वृद्धि हो सकती है तथा देशी प्रजातियों से प्रतसिपर्द्धा में आगे नकिल सकती है।
- वनों की कटाई और क्षरण: उच्च तापमान के कारण वनों की कटाई और क्षरण में वृद्धि हो सकती है, क्योंकि इससे पारस्थितिकि तंत्र वनाग्नि, कीटों और बीमारियों के प्रतति अधिक संवेदनशील हो सकता है।
- प्रजातियों की संरचना में बदलाव: कई प्रजातियाँ टंडी परस्थितियों की तलाश में अधिक ऊँचाई या अक्षांशों की ओर पलायन कर सकती हैं, जसिसे प्रजातियों का स्थानीय स्तर पर वलिप्त होना संभव है।
- मानव समुदायों पर प्रभाव: बढ़ते तापमान से वन उत्पादकता प्रभावित हो सकती है, जसिसे भोजन, दवा और आश्रय के लयि उष्णकटिबंधीय वनों पर नरिभर स्थानीय एवं स्वदेशी समुदायों की आजीविका को खतरा हो सकता है।

बढ़ते तापमान से प्रमुख जैवविधिता क्षेत्रों की सुरक्षा कसि प्रकार की जा सकती है?

प्रकृति-आधारित समाधान विकसित करना और उनका वसितार करना

पारस्थितिकि तंत्र को पुनरस्थापित करना

पुन:वनीकरण पहल

आवास संपर्क पहल

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लयि पारस्थितिकि तंत्र का लाभ उठाना, एकल-फसल वृक्षारोपण जैसी अनुपयुक्त प्रथाओं से बचना तथा वविधि, अनुकूल पारस्थितिकि तंत्रों पर ध्यान केंद्रित करना। कार्बन अवशोषण और जैवविधिता को बढ़ाने के लयि वनों, आरद्रभूमि, पीटलैंड और मैंग्रोव के संरक्षण एवं पुनरस्थापन को प्राथमिकता दीजयि। पारस्थितिकि तंत्र को बहाल करने के लयि देशी प्रजातियों के पुन:प्रवेश सहति पुन:वनीकरण रणनीतियों का अन्वेषण करना। खंडति आवासों को जोड़ने के लयि गलियारों का नरिमाण करना, जसिसे प्रजातियों को प्रवास करने तथा बदलती जलवायु परस्थितियों के अनुकूल

आक्रामक प्रजाति प्रबंधन

अवसर प्राप्त हों।
आक्रामक प्रजातियों के प्रसार तथा वशिष रूप से आक्रामक प्रजातियों को नशाना बनाने वाले प्राकृतिक शिकारियों को रोकने के लिये, सीमाओं पर उत्पादों (पौधों, जानवरों और मट्टि) की नगिरानी और नरीक्षण कया जाना चाहयि।

???????? ???? ???? ???? ????:

प्रश्न: प्रमुख जैवविधिता क्षेत्र (KBA) क्या हैं? यह ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन से कसि प्रकार प्रभावति होते हैं?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रलिमिस:

प्रश्न. "मोमेंटम फॉर चेंज: क्लाइमेट न्यूट्रल नाउ" यह पहल कसिके द्वारा शुरू की गई थी? (2018)

- (a) जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल
- (b) UNEP सचविलय
- (c) UNFCCC सचविलय
- (d) वशिष मौसम वज्जान संगठन

उत्तर: (c)

मेन्स

1. भारत सरकार दवा कंपनयिों द्वारा दवा के पारंपरिक ज्जान को पेटेंट कराने से कैसे बचाव कर रही है? (वर्ष 2019)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/warming-of-key-biodiversity-areas>

